''प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश'' (गुल्जार दादी)
(मीटिंग के भाई बहिनों प्रति)

आज अमृतवेले आप सबकी यादप्यार लेकर वतन में पहुंची तो सदा के मुआफिक आज भी बाबा सामने खड़े थे और दूर से ही अपने अमूल्य बांहों के हार और स्नेही मुख के सुनहरे शब्दों द्वारा बोले ''आओ मेरी मस्तकमणि बच्ची आओ।'' बाप के बस यह आलाप सुनते-सुनते शक्ति के सागर में समाई हुई सम्मुख पहुंच गई और रूहानी स्नेह में, बांहों में लवलीन हो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची आज किसकी याद लाई हो? मैं बोली बाबा आपके पास तो पहले ही आज की विशेष टीचर्स बहिनें और सेवाधारी पाण्डवों की याद पहुंच ही गई है। बाबा बोले, देखो सिर्फ याद नहीं पहुंची है लेकिन सब मेरे विश्व सेवा के सहयोगी साथी मणियां बन बाबा के गले का हार बन बाप में समाये हुए हैं। यह सुनते मैंने देखा बापदादा के गले में सब मणियां रंग-बिरंगी लाइट से चमक रही थी। यह दृश्य भी देखने वाला था। बाबा भी एक एक मणी को बहुत मीठी दृष्टि से देख रहे थे फिर बाबा बोले, बापदादा इन सभी बच्चों की हिम्मत को देख खुश है जो सबने संकल्प किया है कि अब तो स्व-परिवर्तन द्वारा बाप को भी प्रत्यक्ष करना ही है। बापदादा हर बच्चे के इस संकल्प पर पदमगुणा मदद के लिए साथी हैं। सिर्फ वायदा करने वाले नहीं लेकिन वायदा निभाने वाले हैं। बोलो, मेरे सब महारथी बच्चे दृढ़ संकल्प की सफलता का हार गले में डाल लिया है ना! यही संकल्प है ना कि अब तो करना ही है। सर्व शक्तियों को कार्य में लगाना ही है, समान बनना ही है। कोई भी कमजोर संकल्प के दरवाजे को डबल लॉक लगाकर बन्द करना ही है। बापदादा देख रहे हैं कि हर लवली बच्चा इस दृढ़ संकल्प की, मन में शुद्ध संकल्प की डांस बहुत अच्छी कर रहे हैं। बापदादा खुश है क्योंकि एक बारी अपने दिल की कमजोरी फील करने वाले कभी आगे फेल नहीं होंगे, फ्लाई करते रहेंगे क्योंकि दिल से करने वाले के दिल से कर्मो के हिसाब-किताब का बोझ समाप्त हो जाता है और डबल लाइट बन उड़ने की कला का वरदान प्राप्त हो जाता है। यही सहज उन्नति का साधन है।

उसके बाद बाबा बोले, मेरे यह सेवा प्रति निमित्त महान बच्चे सदा सेवा में बिजी रहते हैं, चलो आज सबको वतन में बुलाए मनोरंजन करते हैं। बाबा का कहना और सबका वतन में इमर्ज हो जाना। सब अर्ध चन्द्रमा के रूप में बाबा के सामने इमर्ज हो गये। बापदादा सबको बहुत स्नेह की दृष्टि दे रहे थे। सब अशरीरी स्थिति में लवलीन थे। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची जैसे बापदादा की दृष्टि से सेकण्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव कर रहे हो, ऐसे सेवा में रहते भी स्वयं शक्तिशाली स्थिति की स्टेज से अशरीरी भव का मन को आर्डर दो और सेकण्ड में अशरीरी बन जाओ। जैसे यहाँ मन, बुद्धि और सब कर्मेन्द्रियां आर्डर में हैं, सेकण्ड में आर्डर करो तो मानने वाली हैं, बोलो, ऐसे स्व के मास्टर आलमाइटी बनने के अनुभवी वा अभ्यासी बने हो ना! सच तो यह सुनते सभी उसी स्थिति में समाये हुए थे। कुछ समय बाद बाबा बोले, ओ मेरे मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरूप बच्चे, अब चलो बाबा के साथ सैर करो। तो बाबा चलने लगे तो हम सब जैसे साकार बाबा आगे जाते थे, हम साथ में जाते थे, ऐसे बाबा आगे आगे थे तो अचानक क्या देखा, हम जैसे आगे चले तो हमारी विशेष पूर्वज आत्मायें भी सामने खड़ी थी। बाबा को सामने आते देख बहुत स्नेह से सभी नजदीक आ गये। हमारी दीदी और दादी भी नजदीक आते दोनों बाहों में समा गई। हमें तो साकार वतन का दृश्य याद आ रहा था। हम सबको भी दोनों ने दृष्टि दी तो बाबा दीदी को बोले, दीदी आप इन सेवा की लगन में मगन रहने वालों को आज अपने हाथ से सौगात दो। दीदी, दादी को देख मुस्करा रही थी। फिर बाबा बोले, चलो तो बगीचे में चलें। हम सब बगीचे में पहुंच गये और सब बैठ गये। हमारे साथ हमारे सभी पूर्वज भी बाबा के आस पास बैठ गये। एक दो को देख सब ऐसे मुस्करा रहे थे जैसे हरेक एक दो को देख् बहुत-बहुत लवलीन रूप में मिल रहे थे। फिर बाबा बोले, दीदी दादी अब आप अपनी ड्युटी निभाओ। तो इतने में देखा कि दादी ने कहा सब खड़े हो जाओ। दादी के हाथ से भिन्न-भिन्न लाइट्स की किरणें निकल रही थी, तो दादी ने सबकी तरफ वह लाइट्स डाली तो भिन्न-भिन्न रंग के हीरे बन गये और सबके पास वह हीरे पहुंच रहे थे। उससे क्या हुआ, ऐसे लग रहा था जैसे सभी ने हीरों की चमकीली ड्रेस पहनी है। सब बहुत रमणीक मुस्कराने का अनुभव कर रहे थे और दादी दीदी भी बहुत रमणीक रूप से सबको देख मीठा मुस्करा रहे थे। फिर बाबा बोले, अच्छा बच्ची अब सदा फरिश्ते के ड्रेसधारी बन सर्व को शक्तियों की सकाश देते रहना। ऐसे कहते दीदी दादी और सर्व आये हुए पूर्वजों को बाबा ने बहुत दिल का दुलार देते विदाई दी और हम सबको भी अपनी दृष्टि में समाते हुए अपने में समा दिया और हम सब अपने स्थूल वतन में पहुंच गये। अच्छा - ओम् शान्ति।